**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12**
**Received: 28-05-2020; Accepted: 14-06-2020; Published: 30-06-2020**
**www.educationjournal.org**
**Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 34-37**

# भारतीय राजनीति में जाति के आधार पर छात्र–छात्राओं की राजनैतिक चेतना : एक समाजषास्त्रीय अध्ययन

**सौरभ मौर्या**
कनिष्ठ षोध अध्येता, (पी–एच0 डी0 समाजषास्त्र), डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विष्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेष, भारत

**सारांष**
भारत विष्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र प्रणाली वाला देष है और विद्यार्थी भविष्य के निर्माता है। वर्तमान समय में छात्र–छात्राओं में राजनैतिक चेतना का होना अति आवश्यक है, जिससे कि वे राजनीति को व्यावहारिक रूप से समझ सकें। प्रस्तुत शोध द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय राजनीति में जाति के आधार पर छात्र–छात्राओं की राजनैतिक चेतना का स्तर क्या है। राष्ट्रीय नेतृत्व का यह दायित्व है कि वे छात्र–छात्राएँ जिन्हें भविष्य में देष की बागडोर अपने हाथों में लेनी है, उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास करे। उन्हें राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनायें तथा उन्हें लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली से अवगत कराएँ और साथ ही राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करें। आधुनिक भारतीय समाज में राजनैतिक चेतना छात्र–छात्राओं में तीव्रता से बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप आज कई छात्र–छात्राएँ राजनीतिक दलों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे है। अकेले की अपेक्षा, समूह में रहकर कार्य करने से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रीय राजनीति के विषय में सचेत रहे। जिससे हमारा समाज प्रगति की दिषा में आगे बढ़ सके।

**मुख्य शब्द :** विद्यार्थी और राजनीति, राजनैतिक चेतना, राजनैतिक सहभागिता, भारतीय राजनीति में जाति।

## 1. प्रस्तावना
भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। स्वतंत्र भारत के संविधान में संघात्मक व्यवस्था तथा वयस्क मताधिकार द्वारा राजनीतिक शक्ति का स्त्रोत वयस्कों में निहित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप वयस्कों को राजनीतिक प्रक्रिया में सहभागिता के विशेष अवसर प्राप्त हुए हैं। भारत जैसे विकासशील देश में राजनैतिक चेतना की अत्यधिक महत्ता पायी जाती है जिसका आधार धर्म निरपेक्ष एवं समतावादी समाज की दिशा में आगे बढ़ना तथा विकास योजनाओं को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाना है। प्रत्येक समाज के सामाजिक परिवेश का प्रभाव वहॉ पर रहने वाले व्यक्तियों की सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना पर पड़ता है। इस चेतना की वृद्धि में शिक्षा, संचार एवं ऐच्छिक प्रयासों का विशेष महत्व होता है। छात्र–छात्राएँ अब अपने परिवेश में होने वाले राजनैतिक बदलाव से भी सुपरिचित होने लगे हैं। जनतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने में राजनीतिक दलों की अहम भूमिका होती है। यह सहभागिता तभी सम्भव है जब उनमें राजनैतिक चेतना की पर्याप्त मात्रा हो। अतः सामाजिक चेतना क्रमशः राजनैतिक चेतना को भी विकसित करती है और चेतना की वृद्धि में संचार, शिक्षा के साथ–साथ राजनैतिक दल एवं स्वैच्छिक संगठनों का भी योगदान होता है। एक अच्छे लोकतंत्र की स्थापना के लिए वहॉ के नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता का होना अत्यन्त आवष्यक है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
किसी भी समाज या देष की युवा पीढ़ी राष्ट्रीयता के निर्माण की मुख्य कड़ी होती है। भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में हजारों युवा विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी रही है। देष के विद्यार्थियों एवं युवा वर्ग ने राजनीतिक घटनाचक्र को नया मोड़ देने और राजनीतिक चेतना के जागरण में सदैव ही क्रान्तिकारी भूमिका निभाई है। किसी भी देष के निर्माण एवं उसे प्रगतिषील बनाने में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः विष्व के इस बड़े लोकतंत्र की रक्षा के लिए यह जानना आवष्यक है कि भारतीय राजनीति में जाति के आधार पर छात्र–छात्राओं की राजनैतिक चेतना का स्तर क्या है। क्या राजनैतिक चेतना का स्तर षिक्षा, जाति, एवं राजनैतिक दलों की सदस्यता से प्रभावित होता है। राजनैतिक समाजषास्त्र के क्षेत्र में इस शोध का बहुत महत्व है।

## 3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
प्रस्तुत शोध समस्या के सन्दर्भ में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के उपरान्त कालक्रमानुसार उसे व्यवस्थित करके लिपिबद्ध किया गया।

सरफराज अहमद (2010) ने अपने अध्ययन ''इम्पैक्ट ऑफ एरिया ऑफ रेजीडेन्स एण्ड एस0 ई0 एस0 दि एक्वीषन ऑफ प्रिज्यूडिस एमंग कॉलेज स्टूडेन्टस्'' में 500 ग्रामीण–नगरीय विद्यार्थियों का अध्ययन करके उन पर जाति पूर्वाग्रह पैमाने का अध्ययन करके बताया कि नगरीय विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में जाति के प्रति पूर्वाग्रह अधिक है।

नोरिस (2014) ने 'राजनीतिक सहभागिता' से सम्बन्धित अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने ने यह पाया कि सामाजिक–आर्थिक संसाधन लोगों में राजनैतिक चेतना एवं सहभागिता लाने में अपनी सार्थक भूमिका निभाते है।

अब्दुल हामिद अब्दुल्लाह (2016) ने राजनैतिक चेतना से सम्बधित अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने ने यह पाया कि व्यक्ति की राजनीतिक पसन्द पर जाति, प्रजाति, धर्म, लिंग, का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

चन्द्र मुजफ्फर व सयामुसद्दीन हेरिस (2018) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि व्यक्ति में राजनैतिक चेतना लाने में जनसंचार के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एच0 एन0 सिंह (2019) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि अनुसूचित जाति के अल्प विद्यार्थी ही राजनीतिक क्रियाकलापों में

अत्यधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, क्योंकि अध्ययन में 24 प्रतिशत सूचनादाता उच्च, 34 प्रतिशत मध्यम तथा 42 प्रतिशत निम्न राजनीतिक सहभागिता को प्रदर्शित करते हैं। यह तथ्य इस बात का परिचायक है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का उच्च शिक्षित होने के उपरान्त भी उनमें उच्च राजनीतिक सहभागिता का अभाव है।

### 4. अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च जाति, पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों में राजनैतिक चेतना का अध्ययन करना।
2. शैक्षणिक एवं राजनीतिक सहभागिता के आधार पर विद्यार्थियों में राजनैतिक चेतना के प्रसार का अध्ययन करना।

### 5. अध्ययन की परिकल्पना

1. उच्च जाति के विद्यार्थियों में, पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।
2. जो विद्यार्थी राजनैतिक दलों के सक्रिय सदस्य है उन विद्यार्थियों में गैर राजनैतिक दलों वाले विद्यार्थियों की तुलना में राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है।

### 6. अध्ययन क्षेत्र की परिसीमा

प्रस्तुत शोध को केवल लखनऊ जनपद में ही किया गया है। प्रस्तुत शोध में लखनऊ विष्वविद्यालय के स्नातक एवं परास्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।

### 7. अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत मात्रात्मक उपागम एवं अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना का चयन किया गया है।

### 8. जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के अन्तर्गत लखनऊ जनपद के समस्त राज्य विष्वविद्यालय आते हैं। वहीं प्रस्तुत शोध हेतु यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा लखनऊ विष्वविद्यालय के 25 छात्र एवं 25 छात्राओं (कुल 50 छात्र–छात्राओं) को प्रतिदर्ष के रूप में सम्मिलित किया गया है।

### 9. उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए स्वनिर्मित 'साक्षात्कार अनुसूची' का प्रयोग किया गया है।

### 10. सांख्यिकीय विधि

आँकड़ों की व्याख्या हेतु सांख्यिकीय विधि के अन्तर्गत प्रतिषत विधि का प्रयोग किया गया है।

### 11. प्रदत्तों का विष्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों की परिकल्पना अनुसार विष्लेषण एवं व्याख्या की गई है। परिकल्पना के अधार पर निम्नलिखित परिणाम निकलकर आये हैं–

**11.1 उच्च जाति के विद्यार्थियों में, पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।**

**तालिका संख्या 1.(क): उत्तरदाताओं (छात्रों) में जाति के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्तर**

| क्र0 सं0 | राजनैतिकीकरण का स्तर | उच्च जाति | पिछड़ी जाति | अनुसूचित जाति | योग | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | निम्न स्तर (0–20) | 1 | 1 | 2 | 4 | 16 |
| 2. | मध्यम स्तर (21–40) | 3 | 2 | 2 | 7 | 28 |
| 3. | उच्च स्तर (41–60) | 9 | 4 | 1 | 14 | 56 |
| | योग | 13 | 7 | 5 | 25 | 100 |

**तालिका संख्या 1.(ख): उत्तरदाताओं (छात्राओं) में जाति के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्तर**

| क्र0 सं0 | राजनैतिकीकरण का स्तर | उच्च जाति | पिछड़ी जाति | अनुसूचित जाति | योग | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | निम्न स्तर (0–20) | 2 | 1 | 0 | 3 | 12 |
| 2. | मध्यम स्तर (21–40) | 7 | 5 | 3 | 15 | 60 |
| 3. | उच्च स्तर (41–60) | 4 | 2 | 1 | 7 | 28 |
| | योग | 13 | 8 | 4 | 25 | 100 |

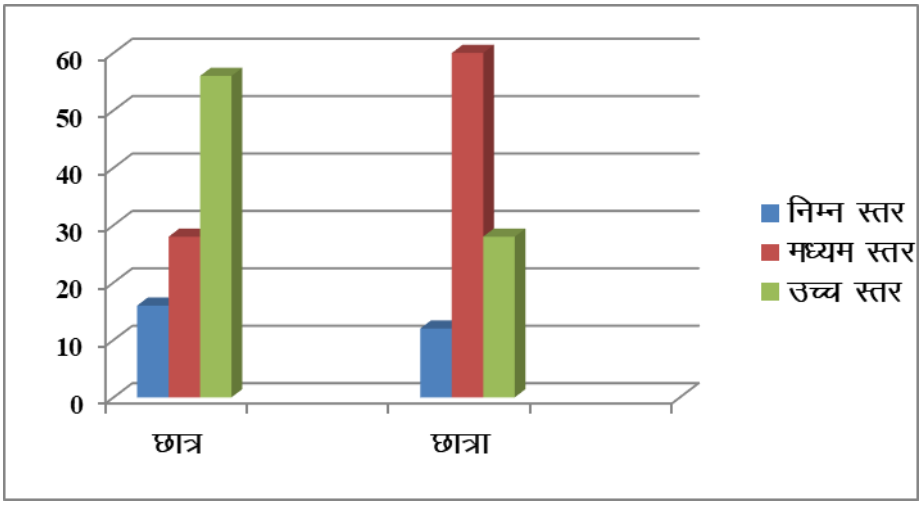


**चित्र संख्या 1: जाति के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्तर (प्रतिषत में)**

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 (क) एवं तालिका संख्या 1 (ख) और चित्र संख्या 1 में छात्र–छात्राओं को उच्च जाति, पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति समूहों में विभाजित किया गया है। 16 प्रतिषत छात्रों में राजनैतिक चेतना निम्न स्तर, 28 प्रतिषत छात्रों में राजनैतिक चेतना मध्यम स्तर तथा 56 प्रतिषत छात्रों में राजनैतिक चेतना उच्च स्तर की पायी गयी। जबकि 12 प्रतिषत छात्राओं में राजनैतिक चेतना निम्न स्तर की, 60 प्रतिषत छात्राओं में राजनैतिक चेतना मध्यम स्तर की तथा 28 प्रतिषत छात्राओं में राजनैतिक चेतना उच्च स्तर की पायी गयी। अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जाति के आधार पर उच्च जाति के छात्र–छात्राओं में पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की तुलना में राजनीतिक चेतना अधिक हैं। वहीं प्रस्तुत चित्र के अनुसार छात्राओं की तुलना में छात्रों में राजनैतिक चेतना अधिक पायी गयी है।

**11.2 जो विद्यार्थी राजनैतिक दलों के सक्रिय सदस्य है उन विद्यार्थियों में गैर राजनैतिक दलों वाले विद्यार्थियों की तुलना में राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है।**

**तालिका संख्या 2: विद्यार्थियों की राजनैतिक दल की सदस्यता और राजनैतिक चेतना का स्तर**

| क्र0 सं0 | राजनैतिक दल की सदस्यता | राजनैतिक चेतना का स्तर | | | | | | योग | कुल प्रति0 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | निम्न | प्रति0 | मध्यम | प्रति0 | उच्च | प्रति0 | | |
| 1. | हाँ | 1 | 5.56 | 2 | 11.11 | 15 | 83.33 | 18 | 100 |
| 2. | नहीं | 6 | 18.75 | 20 | 62.50 | 6 | 18.75 | 32 | 100 |

प्रस्तुत तालिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि जो उत्तरदाता राजनैतिक दल के सदस्य हैं उनमें राजनैतिक चेतना के स्तर के अन्तर्गत निम्न में 5.56 प्रतिशत, मध्यम में 11.11 प्रतिशत तथा उच्च में 83.33 प्रतिशत उत्तरदाता सम्मिलित हैं। वहीं जो उत्तरदाता राजनैतिक दल के सदस्य नहीं हैं उनमें राजनैतिक चेतना के स्तर के अन्तर्गत निम्न में 18.75 प्रतिशत, मध्यम में 62. 50 प्रतिशत तथा उच्च में 18.75 प्रतिशत उत्तरदाता सम्मिलित हैं। अतः इससे स्पष्ट होता है कि जो विद्यार्थी राजनैतिक दलों के सक्रिय सदस्य है, उन विद्यार्थियों में गैर राजनैतिक दलों वाले विद्यार्थियों की तुलना में राजनैतिक चेतना अधिक पायी गयी हैं।

## 12. निष्कर्ष

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह पाया गया कि छात्राओं की तुलना में छात्रों में राजनैतिक चेतना अधिक है। वहीं उच्च जाति के छात्र–छात्राओं में पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की तुलना में राजनीतिक चेतना अधिक पायी गयी। अतः इससे स्पष्ट होता है कि जाति का प्रभाव छात्र–छात्राओं की राजनैतिक चेतना पर पड़ता है। अतः परिकल्पना सिद्ध होती है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यार्थियों की राजनैतिक दल की सदस्यता, उनकी राजनैतिक चेतना के स्तर को प्रभावित करती है। अतः परिकल्पना सिद्ध होती है।

## 13. सुझाव

1. प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों की तुलना में छात्राओं में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार बहुत जरूरी है, क्योंकि राजनीतिक शिक्षा होने पर ही उनमें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति सुधारने के प्रति जागरूकता आयेगी और उन्हें सरकारी प्रयासों की जानकारी होगी।
2. राजनैतिक चेतना के स्तर को बढ़ाने के लिये मीडिया की प्रमुख भूमिका होती है। मीडिया के माध्यम से लोगों में समाज में हो रहे नित्य नवीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से अवगत कराना है।
3. विद्यार्थियों का यह कर्तव्य बनता है कि वह राष्ट्रहित को ही सर्वोपरि समझें। भविष्य निर्माण के लिए विद्यार्थियों को राजनीति में भी सहभागिता करनी चाहिए। विष्वविद्यालयों में चुनाव व राजनीतिक क्रियाएँ भी होनी चाहिए।

## 14. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहूजा, राम (2012). भारतीय सामाजिक व्यवस्था, जयपुर : रावत पब्लिकेषन्स.
2. बिस्वाल, तपन (2017). भारतीय शासन, संवैधानिक लोकतंत्र और राजनैतिक प्रक्रिया, नई दिल्ली : ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड.
3. बघेल, एस0 व कर्चुली, टी0 पी0 सिंह (2015). राजनैतिक समाजषास्त्र, नई दिल्ली : विवेक प्रकाषन.

4. गार्नर, राबर्ट, फर्डीनण्ड, पीटर व लॉसन, स्टेफनी (2009). इनट्रोडक्शन टू पॉलिटिक्स, यूनाइडेड किंगडम : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. गोयल, मदनलाल (2015). भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, नई दिल्ली : आर0 लाल0 बुक डिपो.
6. जैन, पुखराज (2010). भारतीय संविधान तथा नागरिक जीवन, आगरा : बंसल पब्लिषिंग हाउस.
7. कोठारी, रजनी (1973). कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स, नई दिल्ली : ओरियंट लैंगमैन.
8. कुमार, संजय (2018). भारतीय युवा और चुनावी राजनीति (उभरती हुई भागीदारी), नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन्स.
9. महाजन, धर्मवीर व महाजन, कमलेष (2015). सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान, दिल्ली : विवेक प्रकाषन.
10. www.m.jagran.com
11. https://hi.m.wikipedia.org
12. www.shodhganga.inflibnet.ac.in